International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 13-12-2020; Accepted: 28-12-2020; Published: 19-01-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 23-26

मोहन राकेश की कहानियों में स्त्री- पुरुष के बदलते संबंध

डॉ. एन. लावण्या

सहायक प्राध्यापिका एवं विभागाध्यक्ष, एतिराज़ कॉलेज फॉर वीमेन चेन्नई, तमिलनाडु, भारत

सारांश

स्त्री पुरुष के रिश्ते आज एक ऐसा ज्वलंत विमर्श बन गया है जिस पर कोई कुछ कहना या लिखना चाहता है ।स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामाजिक संबंधों के इटने का जो दौर चला वह रूका नहीं और तेज होता गया । पति पत्नी का संबंध एक झटके से टूटने लगे । अब नारी चार दीवारी से मुक्त होकर स्वतंत्र हो गई है । अपने जीवन में नयी चेतना लाने तत्पर रही है । ख़ासकर मोहन राकेश की कहानियों में मध्यवर्गीय समाज की अतृप्ति, खोखलेपन, निराशा आदि अभिव्यक्त हुई है । राकेश अपनी कहानियों में प्रेम, साहचर्य भावना को व्यक्त करते है तो दूसरी ओर उनकी कहानियाँ व्यतीत कथा के निकट प्रतीत होती है और कुछ अत्याधुनिक की ओर। प्रस्तुत आलेख में कुछ ऐसे ही महत्त्वपूर्ण मुद्दों को रेखांखित करने का प्रयास किया गया है

मूल शब्द: स्त्री – पुरुष संबंध, सामाजिक मर्यादाओं का दबाव, अहं का टकरार, दाम्पत्य जीवन का आधार ।

प्रस्तावना

स्त्री और पुरुष मानव की दो इकाइयाँ है । इन दोनों का पारस्परिक सम्बंध मानव अस्तित्व की आधारशीला है । स्त्री-पुरुष संबंधों का अस्तित्व है परिवार। यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है । मानव जीवन में परिवार का अपना महत्व होता है । वस्तुतः परिवार उन व्यक्तियों का समूह है जो सेवाभाव से एक दूसरे के साथ रहते हैं । उषा मंत्री के अनुसार " परिवार ऐसे वृत्त है जिसमें अन्य संबंधों की तुलना के पति – पत्नी का सम्बंध अधिक अंतरंग, अनौपचारिक और महत्वपूर्ण है"। पति – पत्नी के सहयोग पर ही परिवार आधारित है ।

वैदिक काल से ही भारत में परिवार प्रणाली का विशेष महत्व रहा है। भारत में व्यक्ति जीवन के कुछ आदर्श और मूल्य निश्चित किये गये है, जिनकी प्राप्ति परिवार से ही संभव होती है । यहाँ मनुष्य जीवन को चार आश्रमों से विभाजित किया गया है। - ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास । अतः भारतीय समाज में परिवार व्यक्ति के जीवन एवं चिंतन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है ।

अंग्रेज़ी शासन, आधुनिक शिक्षा, वैज्ञानिक प्रगति तथा अन्य सामाजिक परिवर्तनों के कारण भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन होने लगा। ख़ासकर स्वाधीनता के बाद भारत में काफ़ी परिवर्तन रहा है । इस समय सबसे अधिक परिवर्तन वैयक्तिक संबंधों को लेकर हुआ है । मुख्यतः स्त्री-पुरुष संबंधों में, इसमें वर्तमान परिवार संबंधी परिकल्पना को तथा पवित्रता को बेकार सिद्ध कर दिया । परिवार शिथिल होने लगा । विवाह एक समझौता मात्र रह गया । विवाह का जन्म जन्मान्तर के संबंधों की कोई कल्पना अब उसके मानस में भी नहीं रह गयी।

औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार का विघटन होने लगा । संयुक्त परिवार के सदस्यों में निजी अधिकार चेतना और संपत्ति के विषय में स्वार्थ भावना जागने लगी। हर पति – पत्नी अपने अस्तित्व पर सक्रिय रूप से सोचने लगे । फलस्वरूप धीरे धीरे संयुक्त परिवार विघटित हो गया और अणु परिवार को ज़्यादा मान्यता मिलने लगी ।

नारी का बदलता रूप

सभी युगों में नारी की स्थिति में काफ़ी परिवर्तन हुआ है । वैदिक युग की सम्मानित नारी वैज्ञानिक युग तक आते – आते पुरुष की सहधर्मिणी न रहकर उसकी दासी तथा विलासिता की सामग्री बन गयी । अंग्रेज़ी के आगमन और पाश्चात्य एवं संस्कृति के प्रचार प्रसार के साथ ही साथ

समाज में नारी – संबंधी दृष्टिकोण परिवर्तित हो गया । वैज्ञानिक विकास के कारण अनेक प्राचीन विश्वास और सामाजिक अंधविश्वास समाप्त हो गये । राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विध्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद तथा महात्मा गाँधी जैसे समाज सुधारकों के प्रयासों से नारी की दशा में बदलाव आया । बहु- विवाह, सती प्रथा , बाल – विवाह , अनमेल विवाह आदि अवैध घोषित किए गये ।

भारतीय नारी के बदलाव में विदेशी नारियों का महत्वपूर्ण योगदान है । औधयोगिकरण शिक्षा के प्रचार तथा बदलते जीवन परिवेश के कारण आज का नारी घर की चार – दीवारी में बाहर निकलकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के समक्ष होने लगी। आधुनिक नारी अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति अधिक जागरूक है । वह स्वयं आत्म निर्भर होकर अपना मार्ग निर्धारित करने लगी है । स्वाधीनता के बाद नारी अधिक आत्म निर्भर बनने के लिए नौकरी करने लगी है । अब वह मात्र पुरुष पर निर्भर रहनेवाली नहीं है अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने के लिए स्वयं सक्षम है । अब भारतीय नारी का रूप बदल गया। अब वह अबला नहीं पुरुष की छाया के बिना भी जीवन बिताने की क्षमता उसमें आगयी है ।

पुरुष का स्वरूप

प्राचीन काल से परिवार का दायित्व पुरुष संभालता आया है । पुरुष घर का मुखिया होता था । भारतीय परिवार में पिता या पुरुष की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है । परंतु अब परिस्थिति बदल गयी है । वह आज परिवार का सदस्य मात्र है । परिवार में आर्थिक परिस्तिथि के अनुसार पुरुष या स्त्री का स्थान निश्चित किए जाने लगा । दोनों नौकरी करनेवाले हैं तो परिवार में दोनों का महत्व बढ़ जाता है । इसलिए स्त्री अपनी मर्ज़ी पर जीवन बिताती है। ऐसे संदर्भों में परिवार तथा अन्य क्षेत्रों में पुरुषों की भूमिका बदलने लगी । इस विशेष संदर्भ में पुरुष का बदलता हुआ स्वरूप सामने आता है।

स्त्री – पुरुष संबंध और राकेश की कहानी साहित्य

राकेश जी की कहानियों के संदर्भ में तत्कालीन सामाजिक यथार्थ उसकी पूरी गहराई के साथ अनावृत हुआ है । राकेश का उद्देश्य कल्पना को प्रस्तुत करना नहीं , बल्कि वर्तमान जीवंत सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करना रहा है । 'अपरिचित' कहानी विपरीत मानसिकतावाले पति पत्नियों के जुड़े रहने की अभिशप्तता को प्रस्तुत करनेवाली है । कहानी की स्त्री पति से परित्यक्ता न होने पर भी उसका जीवन परित्यक्ता का जैसा ही है । पत्नी अपनी वैयक्तिक भावनाओं को मूल्य देते हुए जा रही है । पर जिस वातावरण में वह रहने के लिए मजबूर हो रही है उसमें उसकी भावनाएँ निर्मूल सिद्ध होती है " इन्हें मेरी कोई आदत अच्छी नहीं लगती ......मगर ये कहते हैं की ये सब आइडल मन की वृत्तियाँ हैं । इन्हें क्लब संगीत सभाएँ और डिन्नेर पार्टियाँ अच्छी लगती है ।......... मुझे वहाँ ज़रा अपनापन महसूस नहीं होता"। इस प्रकार पारस्परिक समझौते के अभाव में दोनों अपने दाम्पत्य जीवन में असफल निकलते हैं ।

" एक और ज़िंदगी" में प्रकाश और बीना के वैवाहिक में शिथिलता होती है । प्रकाश और बीना दोनों अपने अपने व्यक्तित्व को महत्व देते हैं । इसलिए छोटी-छोटी बातों को लेकर उनमें तनाव उत्पन्न होता है और वे अलग अलग रहने लगते हैं । उनका बच्चा पलाश भी उन दोनों के दाम्पत्य – जीवन की शिथिलता दूर करने का माध्यम नहीं बन पाता । फिर प्रकाश दूसरा विवाह कर लेता है । पर दूसरी पत्नी निर्मला की पागल – प्रवृति से पुनःउसका दाम्पत्य जीवन असफल हो जाता है ।

"गुंझल" पति पत्नी के विघटित संबंधों की कहानी है । चन्दन और कुंतल पति पत्नी होते हुए भी आपसी तनाव के कारण एक दूसरे से दूर हैं । उनके दाम्पत्य की असफलता का कारण सामंजस्य का अभाव है । " तुम अपने मन में क्या चाहती हो क्योंकि तुम्हारे मन की बात का मुझे अभी तक पता नहीं चल सका"। दोनों एक साथ रहकर भी एक दूसरे से मुक्त होना चाहते हैं । मुक्ति की राह न मिल पाने के कारण वे अभिशप्त जीवन बिताने लगते हैं । "ग्लासटैंक", "उसकी रोटी", "दो राह", "लक्ष्य हीन" जैसी कहानियाँ भी विघटित स्त्री- पुरुष सम्बन्धों की गहराई को नापनेवाले कहानियाँ है।

सामाजिक मर्यादाओं का दबाव

व्यक्ति समाज की इकाई है । अतः उसके ऊपर समाज का नियंत्रण हमेशा रहता है। उसके अनंत आवश्यकताओं, विचारों तथा भावनाओं की पूर्ति वह समाज से ही प्राप्त करना चाहता है । उसे सामाजिक मर्यादाओं एवं नियमों का पालन करना अनिवार्य है । राकेश जी की कहानियों में बहुत ऐसे पात्र है जो मानवीय संबंधों के विघटन के शिकार है ।

"सुहागिने" कहानी की मनोरमा केवल सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं के कारण वैवाहिक जीवन चलाती है । वैवाहिक जीवन का सुख उसे अपने पति से नहीं मिलता । अपने पति की आर्थिक कठिनाइयों के

कारण उसे मातृत्व की कामना से भी वंचित रहना पड़ता है।

"क्वार्टर" कहानी का शंकर और राधा पति- पत्नी है। शंकर मिसेस शर्मा, मिसेस लल्ला जैसी स्त्रियों के साथ संबंध रखता है। राधा अपने पति के व्यवहार से असंतुष्ट है। उन दोनों के बीच तनाव होता रहता है । वह अपने मायके जाने की तैयारी करती है तो शंकर कहता है "तुम्हारा यहाँ से चली जाना ही बेहतर हो सकता है"।फिर भी राधा सामाजिक दबाव और संबंधों की मज़बूती के कारण शंकर के साथ जुड़ी रहती है।

इसी प्रकार " फ़ौलाद का आकाश" के रवि और मीरा , ख़ाली के जुगल और तोषी, "गुंझ्ल" के चंदन और कुंतल जैसी स्त्री – पुरुष एक दूसरे से अलग रहने की कामना करती हैं पर सामाजिक मर्यादाओं एवं मान्यता के कारण उन्हें मजबूरन एक साथ रहना पड़ता है।

अहं की टकरार

स्त्री – पुरुष दोनों अपनी मान्यताओं पर टिके रहने से उनके बीच संघर्ष पैदा होता है । मध्यवर्ग के दाम्पत्य में पति पत्नी का अहं दाम्पत्य जीवन को सहज – स्वाभाविक नहीं रहने देता। अपनी – अपनी मान्यताओं पर डटे रहने के कारण दोनों में कोई आत्मीय संवाद नहीं हो पाता । अतः दोनों के अहं की टकरार से पारस्परिक सम्बंध शिथिल हो जाता हैं। राकेश के अनेक पात्र इसी प्रवृत्ति से चलते हैं। इसलिए जीवन को अभिशाप के रूप में ढोने के लिए विवश भी।

" एक और ज़िंदगी" के प्रकाश और बीना भी अहंबोर शिकार हैं। बीना स्वयं को प्रकाश से उच्च स्तर मानती है। क्योंकि वह प्रकाश से ज़्यादा कमाती है। वह उसके समान पढ़ी लिखी है तथा खुले विचारों की भी। आज की नारी जीवन को अपने ढंग से जीना चाहती है । प्रकाश परंपरवादी विचारों का है । वह अपनी विरासत से अहंवादी है। इसलिए दोनों अपना – अपना स्वतंत्र ताना – बाना बुनकर जी रहे हैं। तलाक़ होने के पश्चात प्रकाश निर्मला से विवाह करके अपने अहं को क़ायम रखना चाहता है। पर निर्मला का पागलपन उसे असफल बना देता है। फिर प्रकाश और बीना की मुलाक़ात होती है पर दोनों के अहं उन्हें अलग- अलग रास्ते पर चलने के लिए विवश करते हैं।

"अपरिचित" कहानी की नलिनी कॉलेज के लेक्चरर हैं। वह एक ऊँचे पद पर होने की गर्व करती है। वह चाहती है उसके पति भी उसके अनुरूप रहे। वह एक भरा – पूरा घर चाहती है , जिसमें उसका आदेशों का पालन हो। पर पति इसे स्वीकार नहीं करता है।"वह जो चाहती थी वह मैं नहीं कर पाता था और जो कुछ मैं चाहता था, उससे नहीं होता था। नतीजा यह निकलता है कि उनके संबंधो में अलगाव होता है।

" ज़ख्म" कहानी का नायक अहं के कारण उसका जीवन नष्ट हो जाता है और वह जीवन के आधार की खोज में असफल निकलता है । वह किसी तरह के बंधन में जीना नहीं चाहता है। पर जब लंबी बेकारी के दौर से गुजरना पड़ता है और कई दिन शराब को छूने भी न मिलता है तब उसके अहं को ठेस पहुँचती है। उसकी अहं भावना ही उसके जीवन में बिखेर देती है।

स्त्री-पुरूष संबंध में संदेह

स्त्री – पुरुष का परस्पर विश्वास की दाम्पत्य जीवन का आधार है। आज के वैज्ञानिक युग के बदलते परिवेश में स्त्री-पुरुष को घर के चहार – दीवारी से बाहर जाकर नौकरी करनी पड़ती है । दोनों को अन्य स्त्री- पुरुष के साथ मिलकर कार्य करना भी पड़ता है। पति जब पत्नी के कार्यों तथा व्यवहार को लेकर दिमाग़ में शंकाएँ तथा संदेह पाल लेता है तो दोनों ही कुंठित , असहज जीवन जीने को विवश हो जाते है।

"ख़ाली" कहानी का नायक जुगल सदा अपनी पत्नी को संदेह की दृष्टि से देखता है। जुगल की पत्नी तोषी शादी के पहले कुछ पुरुषों के साथ संपर्क रखती थी । शादी के पश्चात भी वह अपने विवाह पूर्व के प्रेम की यादों को दिल में संजोकर जीती है । क्योंकि जुगल के साथ का जीवन उसे को असफल लगता है । जुगल हमेशा उसे संदेह की दृष्टि से देखता है। वह कहती है " उसकी साड़ी की निचाई ब्लाउज़ की ऊँचाई – इन पर जुगल की नज़र हर वक़्त रहती थी"।

"अर्द्ध विराम" कहानी का नायक मदन अपनी पत्नी पर संदेह करता है। नौकरी में स्थानातंरण होने के कारण कई बार पति को पत्नी से दूर रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में पति को पत्नी के चरित्र पर संदेह होने लगता है। मदन को हमेशा यह चिंता लगी रहती है कि उसकी अनुपस्थिति में अपनी पत्नी तारा क्या क्या करेगी। उसके हृदय में तारा के प्रति अनुराग छिपा रहता है।

संक्षेप में राकेश जी की कहानियों में वैयक्तिक तथा समसामयिक समाज का जीवन चित्रित किया है। राकेश अपनी कहानियों के माध्यम से समसामयिक समाज की परिस्थिति की नब्ज को पकड़ा। आधुनिक यांत्रिक युग में मनुष्य जीवन की विशेष रूप से स्त्री- पुरुष संबंधों में जो बदलाव एवं टकराव उत्पन्न हुआ है। उसे उतारकर अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। राकेश की लेखनी से नारी

का बदलते परिवेश उसकी चरित्र एवं व्यवहार पूरी जीवन्तता दोनों एक साथ अभिव्यक्त हुए हैं। सचमुच मोहन राकेश का कहानी साहित्य बदलते हुए स्त्री- पुरुष संबंधित समस्याओं का यथार्थ रूप से प्रस्तुत करता है ।

संदर्भ सूची

1. मोहन राकेश की रचनाओं में आधुनिक भावबोध –डा. सी . विश्वनाथन
2. आधुनिकता: साहित्य के संदर्भ में –गंगा प्रसाद विमल
3. आधुनिकता के संदर्भ में हिंदी कहानी –डॉ. नरेंद्र मोहन
4. आधुनिकता हिंदी साहित्य में नारी –श्रीमती सरला दुआ
5. आधुनिकता और हिंदी आलोचना – डॉ. इंद्रनाथ मदन
6. आज की कहानी – विजय मोहन सिंह